शेख़ फ़रीद - सबद ३१
फरीदा सकर खंड निवात गुड़ माखिओ मांझा दुध ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

फरीदा सकर खंड निवात गुड़ माखिओ मांझा दुध ॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजन तुध ॥२७॥

सार: जिसे हम अक्सर मूल्यवान समझते हैं जैसे धन, पद, प्रतिष्ठा और बौद्धिक उपलब्धियाँ, यह हमारी इंद्रियों को लुभाती हैं और हमारे अहंकार को पोषित करती हैं। हालाँकि यह फलदायी लग सकती हैं और सुकून भी देती हैं लेकिन कभी इनमें वास्तविक आनन्द नहीं मिलता। वैसे ही जैसे कोई प्यासा अपनी प्यास बुझाने की उम्मीद में खारा पानी पीता है जिससे उसकी प्यास और बढ़ जाती है। सृष्टि की एकता का अनुभव करने में जो गहन आनंद मिलता है वह भौतिक उपभोग से मिलने वाले क्षणिक संतुष्टि से कहीं अधिक है।

फरीदा सकर खंड निवात गुड़ माखिओ मांझा दुध ॥
फ़रीद कहते हैं कि चीनी, मिश्री, शहद, मक्खन और गाढ़ा दूध। ये उत्तम, स्वादिष्ट व्यंजन सांसारिक सुखों का प्रतीक हैं।

सभे वसतू मिठीआं रब न पुजन तुध ॥२७॥
ये सभी मीठी चीज़ेँ आनंददायक हो सकती हैं लेकिन इनमें से कोई भी एकता की अनुभूति के बराबर नहीं है। इनमें से किसी भी भौतिक या संवेदी सुख की तुलना उस आनन्द से नहीं हो सकती जो एकत्व के जितना आनंददायक है। (२७)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद चीनी, शहद, घी और दूध जैसी वस्तुओं की मिसाल देते हैं जो स्वादिष्ट हैं, इनका स्वाद जीभ को आनंद देता है लेकिन यह आत्मा-तृप्ति की गहरी भूख को संतुष्ट नहीं कर सकते। वह हमें याद दिलाते हैं कि सांसारिक आकर्षण चाहे कितने भी भोग-विलास वाले मोहक और मूल्यवान

क्यों न प्रतीत हों वह एक सच्चे आध्यात्मिक संबंध का स्थान नहीं ले सकते। उनका मुख्य संदेश इस बात पर ज़ोर देता है कि वास्तविक और स्थायी आनन्द तभी मिलता है जब मनुष्य सृष्टि की एकता के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com